अभिधान राजेन्द्र कोष भाग-६ (फोल्डर नं. ९६०४६)

रचयिता – विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय निवेदन

प्रासंगिक वक्तव्य

प्रशान्त वपुष श्रीमद् राजेन्द्रसूरि

द्वितीयावृत्ति – प्रस्तावना

सौधर्म बृहत्तपागच्छीय पट्टावली

आभार प्रदर्शनम्

श्री अभिधान राजेन्द्र कोष भाग-६

मकार

म ---------- १

मंडलिठवजीवंत ----------२१

मक्खण ---------- ३७

मघवं ---------- ५९

मण ---------- ७५

मणुस्स ---------- ९५

ममत्त ---------- १०५

मरणविभत्ति ---------- १५१

मल्लि ---------- १५९

महल्लठहंग ----------१८१

महापठम ---------- १९९

महासावग ---------- २१९

माण ---------- २३९

मास ---------- २६३

मियापुत्त ---------- २८७

मिहिला ---------- ३०३

मुत्तिमग्ग ---------- ३१९

मूलगुणपडि ---------- ३४१

मेहकुमार ---------- ३८५

मेहवई ---------- ४२५

मोक्ख ---------- ४४५

मोहणिज्ज ---------- ४६१

रकार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

र ---------- ४६७
रयणमाला ---------- ४८७
राइ ---------- ५०३
राग ---------- ५४४
रासभ ---------- ५६३
रेणु ---------- ५७७

लकार

ल ---------- ५९०
लंबुत्तर ---------- ५९१
लवणसमुद्द ---------- ६०५
लहुत्थाण ---------- ६५३
लेसा ---------- ६७७
लोक ---------- ६९९
लोगविजय ---------- ७२५
लोगसार ---------- ७४२
लोहिल्ल ---------- ७५७

वकार

व ---------- ७५८
वइगुत्तया ---------- ७५९
वंदण ---------- ७६९
वक्खारपव्वय ---------- ७८५
वणप्फइ ---------- ८०३
वण्ण ---------- ८१९
वत्थ---------- ८३५
वत्थपडिमा ---------- ८७९
वरुणप्पभा ---------- ८९७
ववहारकप्प---------- ९२७
वसहि ---------- ९३९
वसुआ ---------- १०५३
वाणमंतर ---------- १०७१
वादपच्चारंभग ---------- १०८७
वासीचंदणकप्प ---------- ११०९
विकहा ---------- ११२९
विज्जुयार ---------- ११५१
विणयंधर ---------- ११८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वित्थाररुइ ---------- ११९३
विमाण ----------१२११
विमोक्ख ---------- १२२३
विवाहपण्णत्ति ---------- १२४७
विसेस ---------- १२६५
विहार ---------- १२७६
विहि ---------- १३२९
वीर ---------- १३३७
वीरंगय ---------- १३९६
वुग्गाहिय ---------- १४१२
वेभार ---------- १४३३
वेयावच्च ---------- १४५२
वोतव्व ---------- १४६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org